विद्याभवन,बालिका विद्यापीठ , लक्खीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग-दशम्, विषय-हिन्दी 🌷🌷

दिनांक- ८/७/२०.

🌷 ***|| अध्ययन-सामग्री ||*** 🌷

प्रश्नाभ्यास :.

पाठ्येत्तर सक्रियता :.

-
- ***पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई ?***

- *__आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के -क्या कारण हो सकते हैं ?__*
- *__गाँव का सामाजिक -सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाते हैं ?__*
- *__आपके अनुसार एक साधु का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए?__*
- *__मोह और प्रेम में अंतर होता है ।भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन को सिद्ध करेंगे ।.__*
-
-

__भाषा -अध्ययन :__

. इस पाठ में आए क्रिया-विशेषण को यहाँ दिया जा रहा है ,उसके भेद को पहचानकर वाक्य में बदले-:.

- धीरे-धीरे
- जब-जब
- थोड़ा -थोड़ा
- उस दिन की संध्या
- थोड़ा -थोड़ा बुखार आने पर
- बिल्कुल कम
- सबेरे ही
- हर वर्ष -
- दिन-दिन
- हँसकर
- जमीन पर

(इसे समझने और क्रिया-विशेषण फिर से पढ़ना होगा ।)

कठिन शब्दों के अर्थ

- मँझोला - ना बहुत बड़ा ना बहुत छोटा
- कमली जटाजूट - कम्बल
- खामखाह - अनावश्यक
- रोपनी - धान की रोपाई
- कलेवा - सवेरे का जलपान
- पुरवाई - पूर्व की ओर से बहने वाली हवा
- मेड़ - खेत के किनारे मिटटी के ढेर से बनी उँची-लम्बी, खेत को घेरती आड़
- अधरतिया - आधी रात
- झिल्ली - झींगुर
- दादुर - मेढक
- खँझरी - ढपली के ढंग का किन्तु आकार में उससे छोटा वाद्यंत्र
- निस्तब्धता - सन्नाटा
- पोखर - तालाब
- टेरना - सुरीला अलापना
- आवृत - ढका हुआ
- श्रमबिंदु - परिश्रम के कारण आई पसीने की बून्द
- संझा - संध्या के समय किया जाने वाला भजन-पूजन
- करताल - एक प्रकार का वाद्य
- सुभग - सुन्दर

<u>इस सत्र में कठिन परिस्थिति के बीच Syllabus में कुछ और पाठ अलग कर दिया गया है ,जिसका विवरण इस प्रकार है -:.</u>

10:39 AM Jio 4G 4G

REVISEDHi...c_2020-21 - केवल-पढ़ने के लि

केवल पढ़ने के लिए - आप इस फ़ाइल के प...

नोट - पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं -

क्षितिज, भाग - 2	काव्य खंड	• देव • जयशंकर प्रसाद - आत्मकथ्य • नागार्जुन - यह दन्तुरित मुसकान, फसल • गिरिजाकुमार माथुर - छाया मत छूना • मंगलेश डबराल - संगतकार
	गद्य खंड	• मन्नू भंडारी - एक कहानी यह भी • महावीरप्रसाद द्विवेदी -स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन • यतीन्द्र मिश्र - नौबतखाने में इबादत • भदंत आनंद कौसल्यायन -संस्कृति
कृतिका, भाग - 2	• एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा! • मैं क्यों लिखता हूँ ?	